तालाबंदी के दौरान आनंद निकेतन के शैक्षिक प्रयास

शरद एस. ताकसाडे और तृप्ति कोकाटे

नई तालीम के दर्शन पर आधारित आनंद निकेतन विद्यालय को प्रयोगवादी विद्यालय के रूप में पहचान मिली। बच्चों के सर्वांगीण विकास में किताबी ज्ञान ही उपयोगी न होकर, प्रत्यक्ष रूप से काम या कर्म के माध्यम से दैनिक जीवन के अनुभवों का भी महत्व है। यह नई तालीम की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है, यह विचार ज्ञान रचनावाद के रूप में हमारे सम्मुख है। यही उद्देश्य रखते हुए आनंद निकेतन विद्यालय पिछले 15 सालों से कार्यरत है। प्रारंभ में अभिभावक वर्ग अपने बच्चों को भेजना नहीं चाहते थे, क्योंकि यहाँ बागबानी, कताई, सिलाई, भोजन बनाना, विशेषतः सफाई कराई जाती है, जिसके उपरान्त बच्चों को अध्ययन का समय नहीं मिल पाएगा और उनका पाठ्यक्रम भी पूरा नहीं हो पाएगा ऐसी उनकी चिंता थी। तब अभिभावकों से संवाद कर के उन्हें यह समझाने का प्रयास किया गया कि दैनिक जीवन के अनुभव एवं प्रत्यक्ष काम के माध्यम से पाठ्यक्रम के अंतर्गत आने वाली क्षमता एवं संकल्पनाएं विद्यार्थी अधिक स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं। इस कार्य में विद्यालय की संचालिका सुषमा शर्मा जी एवं शिक्षकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही और उसमें उन्हें काफ़ी हद तक सफलता भी प्राप्त हुई है। 2005 में नई तालीम शिक्षा पद्धति की यात्रा की पुनः शुरुआत आनंद निकेतन विद्यालय के माध्यम से हुई है। आज लगभग 300 विद्यार्थी यहाँ शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

इस विद्यालय के विद्यार्थी ऐसे परिवारों से आते हैं जो कमजोर आर्थिक परिस्थिति के हैं और कुछ हद तक घरों में शैक्षणिक वातावरण का अभाव है। कुछ बच्चे ऐसे भी है जिनका पालन-पोषण एकल अभिभावक करते हैं। ज़्यादातर परिवार दैनिक मज़दूरी से अपना घर चलाते हैं। इस तबके के परिवार रियायती शुल्क देने में भी कई बार असमर्थ होते हैं। तभी ऐसा समय आया जब मार्च माह के अंतिम समय में कोरोना का कहर टूटा; जिसने संपूर्ण विश्व की गतिविधियों पर प्रभाव डाला। जिसमें आवागमन के साधन, विविध संस्था, महाविद्यालय और विद्यालय भी बंद हो गए।

इस आकस्मिक परिवर्तन से जूझने के प्रयास में हमने ऑनलाइन शिक्षण के विकल्प को जाँचा। तब तकनीकी ज्ञान का प्रयोग करके हमने वाट्सअप ग्रुप बनाए और संवाद रूप से शैक्षणिक प्रक्रिया को शुरू करने का प्रयास किया गया। परन्तु इस प्रयास में सिर्फ 30 प्रतिशत विद्यार्थी तक पहुँचा जा सका। बहुत से अभिभावकों के पास स्मार्ट फोन नहीं थे और जिनके पास थे तो रिचार्ज के लिए उनके पास पैसे नहीं थे। हमने यह महसूस किया कि ऐसी स्थिति में मोबाइल फोन रिचार्ज करना उनकी प्राथमिकताओं की सूची में बहुत देरी से आएगा।

अब विद्यालय के समक्ष एक चुनौती थी कि 70 प्रतिशत विद्यार्थी तक कैसे पहुँचा जाए? तब विद्यालय के शिक्षकों ने अभिभावकों के घर जाकर उनसे मुलाकात की और परिस्थितियों को जानने की कोशिश की। इस कोरोना काल में अनेक ऐसे अभिभावक थे, जिनका काम-काज बंद हो चुका था। उनकी आर्थिक

परिस्थितियाँ काफ़ी दयनीय थी। ऐसे समय में अनेक सेवाभावी संस्थाओं के माध्यम से इन लोगों तक अनाज एवं जीवनापयोगी वस्तुओं को पहुँचाने में हमारे विद्यालय के शिक्षकों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

जब जून महीने में लॉकडाउन में ढील दी गई तब इन परिवारों की स्थिति में सुधार होने लगा और दैनिक जीवन की आवश्यकताओं का तालमेल कुछ हद तक बैठने लगा। बड़ों के साथ बच्चे भी सोचने लगे कि कौनसी चीजें अत्यावश्यक हैं, कहाँ-कहाँ खर्चा घटा सकते हैं। पहले जहाँ हम लोग 30 प्रतिशत विद्यार्थी तक पहुँच रहे थे अब वह आँकड़ा घटकर 20 प्रतिशत पर आ चुका था, क्योंकि अभिभावक अब काम पर जाने लगे थे। फोन अभिभावकों के पास होने के कारण वाट्सअप के माध्यम से बच्चों तक पहुँचने में कठिनाई दिख रही थी। हमें ऑनलाइन शिक्षण की सीमाओं का भी एहसास होने लगा। हमने यह देखा कि केवल एक प्रकार के शिक्षण को प्राथमिकता देने के कारण वर्ग में निहित असमानता कैसे गहराती है।

अतः नया शैक्षणिक सत्र प्रारंभ होने के उपरांत भी कोरोना का कहर होने की वजह से सभी शैक्षणिक संस्थाओं को न खोलने का सरकार का आदेश था। मैं गणित एवं विज्ञान का शिक्षक हूँ, और इन विषयों की अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया वर्चुअल (virtual) माध्यम से कैसे की जाए, यह मेरे लिए एक बड़ी चुनौती थी। तब शिक्षक सभा में विचार विमर्श किया गया।

नई तालीम शिक्षण पद्धति यह मानती है कि प्रत्यक्ष काम के माध्यम से बच्चों को जो अनुभव एवं ज्ञान प्राप्त होता है वही सही शिक्षा है। ऐसे भी बच्चों के सर्वांगीण विकास का अर्थ ही है बालकों का मानसिक, भावनात्मक व शरीरिक विकास। इसी संवाद के बाद हमने तय किया कि इस परिस्थिति को नई तालीम के दृष्टिकोण से देखते हुए अलग व्यवस्था का निर्माण करना होगा। हमने निर्णय लिया कि चार दीवारी के अंदर ही शिक्षा न लेकर प्रकृति से भी हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। यहाँ पर मुझे मराठी लेखक गदिमा (गदी माडगुळकर जी) की कुछ पंक्तियाँ याद आती हैं-

''बिन भिंतीची उघडी शाळा, लाखों इथले गुरू।
झाडे वेळी, पशु, पाखरे, यांशी गोष्टी करु।
बघू बंगला या मुंग्यांचा, सुर ऐकूया या भुग्यांचा।
फुला फुलांचे रंग दाखवीत, उड़ते फुलपाखरू।''

इन पक्तियों के माध्यम से कवि हमें प्रेरित करते है कि हम प्रकृति के घटकों को भी शिक्षा का साधन बना सकते हैं, उसमें सुंदरता है, उसमें ज्ञान है।

करोना के कारण कई परिवारों में आर्थिक तंगी महसूस हो रही थी। इस परिस्थिति को बच्चे समझ रहे थे और उन्हें भी इस समस्या से बाहर निकलने के प्रयासों में सहयोग करना था। इसे ध्यान में रखते हुए शिक्षकों ने सोचा के बच्चों को घर में बागबानी करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। अगर घर में उगी हुई विष मुक्त सब्जियाँ खाने लगे तो स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा।

उसी के साथ शिक्षकों ने समझा कि लॉक डाउन के दौरान घर की महिलाओं पर काम का भार बढ़ गया है। भले ही बाहर काम बंद हो गया हो, लेकिन परिवार को खिलाना, घर की सफाई, कपड़ों की धुलाई इत्यादि काम तो निरंतर चलते रहते हैं और घर के पुरुष सदस्य घर में रहते हुए भी इन कामों में सहयोग नहीं करते हैं। इस अन्याय का भी हमें किसी ढंग से सामना करना था। इसीलिए हमने रसोई से संबंधित प्रकल्पों का भी समावेश हमारे उपक्रम में किया।

अतः सभी शिक्षकों की सहमति से यह तय हुआ कि बागवानी और रसोई से संबंधित कार्य दिया जाए। इन प्रकल्पों का संकलन कर के प्रिंट आउट के रूप में बच्चों को दिया जाए। इन प्रकल्पों को पूर्ण करने के लिए उन्हें एक हफ़्ता देने का नियोजन किया। बच्चों को अगर कोई कठिनाई आती है तो वह फोन पर शिक्षकों से समझ सकते हैं। इसके बाद भी कुछ शिक्षक घर पर मिलकर उनका सही मार्गदर्शन करते हैं। इन कामों को एक-एक हफ़्ते की कालावधि में देने के लिए विभाजित किया गया है, परन्तु इन सब में शिक्षकों के प्रयास के साथ-साथ अभिभावकों का सहयोग आवश्यक था, जिसके लिए अभिभावकों की एक सभा बुलाई गई, जिसमें सभी बच्चे स्वयं प्रेरित होकर यह कार्य करें एवं दैनिक जीवन के माध्यम से भी हम ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं यह सोच उनकी होनी चाहिए।

बागबानी और रसोई ऐसे कार्य हैं, जिनसे सीखने के अनेक अवसर प्राप्त होते हैं। इनके माध्यम से भाषा, गणित, विज्ञान आदि विषयों की क्षमता विकसित करने का प्रयास किया जा सकता है। रसोई घर एक अनोखी प्रोयगशाला है जिसमें हमारी माताएं वैज्ञानिक हैं, जो इस लॉक डाउन के काल में बच्चों को देखने को मिला। इन प्रकल्पों में माता-पिता व बच्चों का सवांद हुआ और आपसी तालमेल के साथ घर के कामों में बच्चों की मदद होने लगी। इन प्रकल्पों के द्वारा बच्चों ने अपने ही घर में रोज़-रोज़ होने वाले कार्यों को गहराई से समझा, जैसे सब्जी में तड़का और अचार बनाने के प्रक्रिया इत्यादि। गणित के माध्यम से उन्होंने अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए लगने वाले आर्थिक ज़रूरत को समझा। एक दिन के राशन की ज़रूरतों का आलेख बनाते हुए महीने की ज़रूरतों का अनुमान

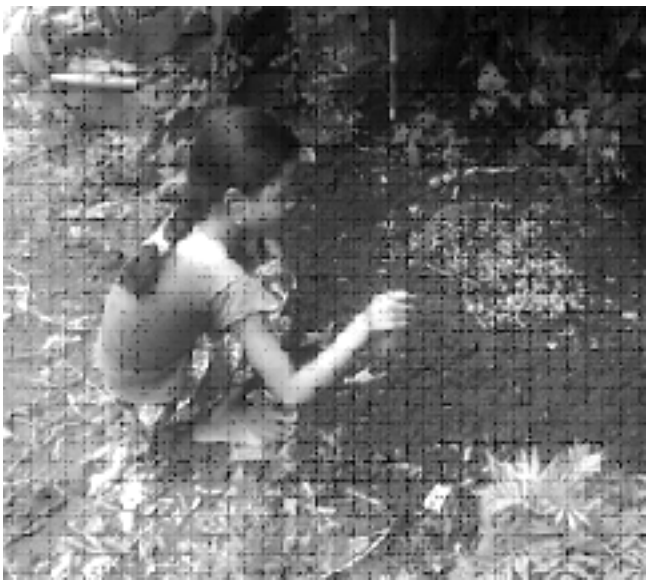

लगाना, उसके लिए लगने वाले ख़र्च का अनुमान लगाना और घर के उत्पादन से तुलना करना। इस के वज़ह से घर में कई महत्वपूर्ण संवाद होने लगे। बच्चों को अपने अभिभावकों की मेहनत का अंदाज़ा आने लगा। उनके विचार-पत्र के माध्यम से वह लिखने लगे। उनकी समझ को बढ़ावा देने के लिए भाषा शिक्षकों ने उन्हें अलग-अलग लेख दिए।

10-13 की उम्र में बच्चे साधारण रूप से अलग-अलग विषयों में जो क्षमता विकसित करते हैं, उन में से कई सारी क्षमताएँ हम इन उपक्रमों के द्वारा विकसित करने कि कोशिश कर रहे हैं। इसके अलावा हम बच्चों को उनके परिसर के सामाजिक संदर्भों से भी जोड़ते हैं। जब हमारे गाँव में रास्ते की चौड़ाई बढ़ाने के कारण पुराने वृक्षों को काटने लगे, तब हमारे शिक्षक इस विनाश के ख़िलाफ जन जागृति करने लगे। उस हफ़्ते के हमारे काम में भी इसी कार्य का प्रतिबिंब था। वृक्षों का वैज्ञानिक, भावनात्मक महत्व, चिपको आन्दोलन का इतिहास, कविताएं इत्यादि इस काम में प्रस्तुत हुए।

इस तरह काम के द्वारा शिक्षकों और बच्चों के बीच संवाद जारी है। ज़ाहिर है कि यह उपक्रम सरलता से आगे नहीं बढ़ता है। अलग-अलग बच्चों के विविध प्रकार की मुश्किलें हैं। कोई विद्यालय में काम लेने नहीं आ पाता, किसी को इन प्रकल्पों में मन नहीं लगता, किसी को इस तरह का काम कठिन लगता है। इन सब मुश्किलों को समझने के लिए शिक्षक बच्चों और अभिभावकों से नियमित तौर पर संवाद करते रहते हैं और उन्हें विविध तरीकों से सुलझाने का प्रयत्न करते हैं।

इस अनुभव से हम सब सीख रहे हैं और इस कठिन दौर में बच्चों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ रहे हैं। इस प्रकोप की उग्रता ने हमें बहुत कुछ महत्वपूर्ण अहसास दिलाए हैं। उनमें सबसे तीव्रता से हमें महसूस हुआ कि वास्तव में सीखने लायक क्या है और क्या नहीं, इस पर पुनर्विचार होना ज़रूरी है। किताबी संकल्पनाओं और क्षमताओं को प्राथमिकता देते-देते बच्चे स्वयं प्रेरित शिक्षण से हट गए हैं। सामाजिक संदर्भों को समझना, उनमें अपना स्थान खोजना और बेहतर समाज की लड़ाई में जुड़ना। क्या यह शिक्षण ज़रूरी नहीं है? ◆

शरद एस. : आनंद निकेतन विद्यालय में गणित और विज्ञान के शिक्षक हैं। वह शौक से बागवानी करते हैं।
संपर्क : sharadanandniketan@gmail.com

तृप्ति कोकाटे : विद्यालय में हिंदी की शिक्षिका हैं। उन्हें कहानी के माध्यम से भाषा पढ़ाने में ख़ास रुचि है।
संपर्क : triptikokate1976@gmail.com